आद्यशंकराचार्यविरचितम्
षट्पदीस्तोत्रम्
(कमलाटीकया संवलितम्)
डॉ.विन्ध्येश्वर पाण्डेय
ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य

आद्यशंकराचार्यविरचितम्

षट्पदीस्तोत्रम्

(कमलाटीकया संवलितम्)

व्याख्याकार

डॉ. विन्ध्येश्वर पाण्डेय

सम्पादक

ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य

हरिहर ज्योतिर्विज्ञान संस्थान के सौजन्य से प्रकाशित

NOTION PRESS

आद्य शंकराचार्य विरचित सुप्रसिद्ध षट्पदी स्तोत्र पर लिखी गई यह सरल, सरस, अद्भुत कमला टीका अपने भाव को आपके हृदय में समाहित करके आपको आध्यात्मिक उन्नति के शिखर तक ले जाएगी। निश्चित ही यह भावपूर्ण कमला टीका आपके चित्त पर सकारात्मक प्रभाव डालते हुए आपके मनोभावों को सही दिशा प्रदान करने में समर्थ होगी ।

आद्यशंकराचार्यविरचितम्

षट्पदीस्तोत्रम्

(कमलाटीकया संवलितम्)

व्याख्याकार

डॉ. विन्ध्येश्वर पाण्डेय

सम्पादक

ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य

विषय सूची

*_*_*

व्याख्याकार की लेखनी से ....✍

आद्य शंकराचार्य की सर्वोत्कृष्ट रचनाओं में से एक है षट्पदीस्तोत्र, इसकी व्याख्या स्वामी अखण्डानन्द ने करके छपवायी है। वह पढ़ने को बहुतों को उपलब्ध है। वर्तमान भारत शिक्षामात्र से मुँह मोड़े चल रहा है, इससे उक्त व्याख्या में कुछ परिष्कार भी हो तो एक बार बाँचकर भाव समझे बिना ही कोई रख देगा।

पूछने पर झट कहेगा कि आज के वैज्ञानिक युग में इन पुरानी बातों की उपयोगिता बची ही क्या है, जैसे वह स्वयं विज्ञान के आकाश में तैर रहा हो। भौतिक विज्ञान को ही विज्ञान मान कर आज घूसखोरी, चोरी, अनैतिकता, राष्ट्रद्रोह आदि में लोग पिछले पापों से फँसे हैं।

भारतवासियों को सारे विज्ञानों में रुचि होती, तत्परता होती तो देश पूरे विश्व में सोने की चिड़िया नहीं, सोने का पर्वत सुमेरु दिखने लगता। वास्तव

विज्ञान एक ही है, वह **वेदान्त** कहा जाता है। उसके अन्दर ही समाजविज्ञान, राष्ट्रविज्ञान, मानवता विज्ञान,मनोविज्ञान, धर्मविज्ञान, प्रकृति विकृति विज्ञान,नीति विज्ञान, राजनीति विज्ञान, शिक्षामूल विज्ञान, विश्वरहस्य विज्ञान, सृष्टिप्रक्रिया विज्ञान, विश्वमूल विज्ञान, परमार्थ विज्ञान, सत्यपथपरिज्ञान और अन्य भी सारे विज्ञान समाहित हैं। इसी से भारत के अति प्रसिद्ध मनीषी वेदान्तदेशिक(श्रीमद्वेंकटनाथजी) ने रहस्यत्रयसार[1] ग्रन्थ में कहा है –

न वेदान्ताच्छास्त्रं न मधुमथनात्तत्वमधिकम् ,
न तद्भक्तात्तीर्थं, न तदभिमतात्सात्विकपदम् ।
न सत्वादारोग्यं न बुधभजनाद्बोधजनकम् ,
न मुक्तेस्सौख्यं न द्वयवचनतः क्षेमकरणम्॥[2]

---

[1] रहस्यत्रय - अष्टाक्षर मंत्र, द्वय मंत्र, चरममंत्र (सर्वधर्मान्परित्यज्य.... श्रीमद्भगवद्गीता १८.६६)।

[2] श्रीमद्वेंकटनाथ विरचित श्रीमद्रहस्यत्रयसार, २८वाँ अधिकार (द्वयाधिकार) श्लो.६५।

भावार्थ - वेदान्त से बड़ा कोई शास्त्र नहीं है, मधुमथन (मधु नामक दैत्य का नाश करने वाले भगवान् श्रीकृष्ण) से बड़ा कोई तत्त्व नहीं है। भगवान् के भक्त के समान कोई तीर्थ नहीं है, भगवदभिमत सात्विक पद से बढ़कर कोई पद नहीं है। सत्वगुण से बड़ा कोई आरोग्य का साधन नहीं है। सुधीजनों की सेवा से बढ़कर

आठ वाक्यों वाले इस पद्य के अगले सात वाक्य प्रथम की ही पुष्टि कर रहे हैं। हमारे ज्ञान विज्ञान की यह विचित्र विडम्बना है कि विरले पण्डित भी समझते होंगे कि प्रत्येक भारतीय को वेदान्त विद्या के द्वारा अपना जीवन निर्दोष और मंगलमय एवं विकासोन्मुख बना लेना चाहिये।

वेदान्त विद्यारस पी सको तो,
पीते रहो क्यों विषयी बने हो,
स्वरूप विज्ञान रखो बनाये,
प्रमाद में क्यों अब भी सने हो॥

प्रस्तुत स्तोत्र के अन्त में संयोगवश जुड़ा षट्पदी शब्द का स्त्रीलिङ्ग आदर्श मानव जीवन के सारे महत्वपूर्ण रहस्य सूचित करता हुआ स्तोत्र की उपयोगिता बढ़ा रहा है। सहृदय जन समझेंगे। यह स्तोत्र मानवीय चेतना में पूरा निखार लाकर क्रम से वेदान्ततत्व निष्ठा में पर्यवसान लाने वाला है। देववाणी का मर्मज्ञ व्यक्ति ही इस स्तोत्र से पूरा लाभ उठा

कोई ज्ञान देने वाला नहीं है। मुक्ति से बड़ा कोई सुख नहीं है और द्वयमन्त्र से बढ़कर कुछ भी कल्याणकारी नहीं है।

सकता है। अनुवाद में मूल का रस ठीक से नहीं मिल पाता।

आरभ्यते नरगिरा चषके निषिच्य,
पानाय सज्जनमनः परिपूरणाय ।
क्षाराम्बुधौ च जलदाः प्रकिरन्ति वारि,
तर्षापहारि न मनाक् च गुणे विकारि॥[3]

आइए इस व्याख्या में हम षट्पदीस्तोत्र के प्रत्येक पद्य के गम्भीर और मार्मिक भावों को समझने का प्रयास करते हैं।

****

---

[3] भावार्थ - बादल से गिरने वाला जल यदि पात्र में गिरता है तो अपने मूल स्वरुप में होने के कारण सज्जनों की तृष्णा को मिटाता है किन्तु वही जल यदि खारे समुद्र में गिरता है तो स्वरुप विकृति के कारण अल्प तृष्णा का भी नाश नहीं करता अपितु विकारी ही होता है।

सम्पादकीय

20 मई 2022 को गोवर्धनजी तथा वृंदावनजी की परिक्रमा के पश्चात् ऋतुचर्या में असावधानी बरतने तथा चिन्ताग्रस्त होने के कारण मेरा स्वास्थ्य खराब हुआ। मैंने यथोचित चिकित्सा लेनी शुरु तो की पर अपेक्षित सुधार हुआ नहीं। मैं ठहरा ज्योतिषी, तो मैंने सोचा देखूँ जरा किस नक्षत्र में स्वास्थ्य खराब हुआ है, तो उस दिन कृत्तिका नक्षत्र था। नक्षत्र माहेश्वरी के रोगवर्णनम् नामक पाँचवें पटल के आठवें सूत्र में लिखा है **कृत्तिकासु नवरात्रपर्यन्तम्**[4] अर्थात् कृत्तिका नक्षत्र में स्वास्थ्य खराब हो जाए तो 9 रात्रियों तक व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब रहता है। चलो मैंने मन को ढाढस बंधाया कि भई कृत्तिका में बीमार पडे हो! तो छटपटा क्यों रहे हो??? नौ दिन सब्र करो तबियत ठीक हो जाएगी। मेरा स्वास्थ्य लगातार गिरता ही जा रहा था, मैं दिल्ली में अकेला ही रह रहा था, इस वजह से न तो मेरी चिकित्सा ठीक से हो पा रही थी न ही देखभाल। भोजन-पानी के तो बस नारायण ही मालिक थे। एक एक पल काटना मुश्किल था। मैं धुरन्धर संहिता के सप्तम पटल में स्वास्थ्यरक्षा के लिए निर्दिष्ट श्लोक का पाठ भी कर रहा था –

अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारणभेषजात् ।

---

[4] नक्षत्र माहेश्वरी, श्रीभागवतानंद गुरु, Notion Press, पञ्चम पटल, पृष्ठ सं. २३

नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥[5]
अर्थ – अच्युत, अनन्त एवं गोविन्द, इन नामोच्चारण रूप औषधि से सभी प्रकार के रोगों का नाश होता है ऐसा मैं सत्य सत्य कहता हूँ ।

खैर... श्रीमन्नारायण भगवान की अहैतुकी कृपा रही और जैसे-तैसे बहुत बुरे दौर के साथ नौ दिन तो बीत गए पर मेरा स्वास्थ्य ठीक हुआ नहीं। फिर मैंने वो प्रयोग किया जो मैं सबको कराता हूँ। मैंने मान लिया कि 9 दिन हो गए आज दसवाँ दिन है, मैं ठीक हो चुका हूँ और मैंने सविधि रोगविमुक्तस्नान किया। अब इसके बाद तो मुझे ठीक हो ही जाना चाहिए था लेकिन तबियत बद से बदतर होती जा रही थी। जिसके दुष्प्रभावजन्य नकारात्मक विचारों ने पूरे दल-बल के साथ आक्रमण कर दिया था, मैं तो पहले से ही खिन्न था ऊपर से स्वास्थ्य भी खराब तो उन्हें फलने फूलने का बढ़िया अवसर प्राप्त हो गया। मैंने सोचा कि आखिर माजरा क्या है? चलो दुबारा से 29 मई के मुहूर्त का परिशीलन करते हैं। परिशीलन करते हुए मुझे मुहूर्त चिन्तामणि के नक्षत्र प्रकरण में वर्णित 47वें श्लोक का ध्यान आया -

रौद्राहिशाक्राम्बुपयाम्यपूर्वा

---

[5] धुरन्धर संहिता, श्रीभागवतानंद गुरु, Notion Press, सप्तम पटल, श्लो.सं.४८, पृष्ठ सं. ७९

द्विदैववस्वग्निषु पापवारे ।
रिक्ताहरिस्कन्ददिने च रोगे
शीघ्रं भवेद्रोगिजनस्य मृत्युः॥ [6]

अर्थ- ध्यान दें यहाँ नक्षत्रों के स्वामियों एवं तिथियों के स्वामियों और तिथियों की संज्ञा तथा ग्रहों की संज्ञा का नाम लिखा है। उनसे हमें नक्षत्र का नाम, तिथि का नाम, वार का नाम आदि ज्ञात करके उनका ग्रहण करना है। ये सभी विषय मेरे ग्रन्थ फलित राजेन्द्र में दिए हुए हैं। रौद्र (भगवान शिव सम्बन्धी अर्थात् आद्रा नक्षत्र), अहि (सर्प अर्थात् अश्लेषा नक्षत्र), शाक्र (इन्द्र सम्बन्धी अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्र), अम्बुप (जल के स्वामी वरुण अर्थात् शतभिषा नक्षत्र), याम्य (दक्षिण दिशा उसके स्वामी यम अर्थात् भरणी नक्षत्र), पूर्वा (तीनों पूर्वा अर्थात् पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा और पूर्वाषाढ़ा), द्विदैव (दो स्वामी हों जिसके अर्थात् विशाखा नक्षत्र), वसु (अर्थात् धनिष्ठा नक्षत्र), अग्नि(अर्थात् कृत्तिका नक्षत्र) ये नक्षत्र यदि पापग्रहों के वार (रविवार, मंगलवार,शनिवार) में पड़ जाएँ और उस दिन रिक्ता तिथि (चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथि) हो या हरि (द्वादशी तिथि) हो या स्कन्द (कार्तिकेय अर्थात् षष्ठी तिथि) हो तो ऐसे योग में रोगग्रस्त होने वाला व्यक्ति शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त होता है। ये सब जानकर मैं एकदम शान्त बैठ गया

---

[6] मुहूर्तचिन्तामणि, पं.विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, श्लो.सं.४७, पृष्ठ सं. ५५

कि अब तो मरना है तो चलो तैयारी करते हैं, चलने की। फिर हुआ कि नहीं नहीं एक बार आयु और मारकेश का विचार भी कर ही लेना चाहिए, जब मरना 100% सुनिश्चित हो जाए तभी झोला उठाना ठीक रहेगा। दिमाग तो काम नहीं कर रहा था, आधा-सीधा जो विचार कर सका किया उससे यही समझ में आया कि अभी मौत वाली मृत्यु (मृत्यु आठ प्रकार की होती है[7]) नहीं होनी है। मेरी हालत ये हो गई थी कि मैं ठीक से बोल नहीं पा रहा था, चलना फिरना मुश्किल था। मेरे एक दो शुभचिन्तकों ने कहा कि मेरी आवाज ऐसी हो गई है जैसे कोई मृत्युशैया पर पड़ा व्यक्ति बोलता है। मैं न तो जी ही पा रहा था और न मुझे मरना ही था, ये परिस्थिति बहुत कष्टकारी लग रही थी। मैंने सोचा ये सारी बात किसी को बता देनी चाहिए ताकि इसका कुछ उपाय हो सके। मैंने आदरणीय श्रीभागवतानन्द गुरु जी को सारी बात बताई और उन्होंने श्री पुरुषोत्तमानन्द गुरु जी को मेरे इस दुर्योग के शमन हेतु महामृत्युञ्जय जप करने को कहा। स्वास्थ्य में आंशिक सुधार भी होने लगा मेरे कुछ मित्र भी बिना बुलाए ईश्वरीय प्रेरणा से मुझसे मिलने आए और परिस्थितियों को देखकर पर्याप्त

---

[7] व्यथा दुःखं भयं लज्जा रोगः शोकस्तथैव च।
मरणञ्चापमानञ्च मृत्युः अष्टविधं स्मृतम् ॥
अर्थ – व्यथा (सामान्य दुःख), दुःख (आधिभौतिक, आध्यात्मिक और आधिदैविक तीनों दुःख), भय, लज्जा, रोग, शोक, मरण (देहत्याग) और अपमान ये मृत्यु के आठ प्रकार जानने चाहिए ।

सहायता भी की और मुझे घर चले जाने की सलाह दी। मुझे भी कुछ दिनों के लिए घर चले जाना उचित ही लगा और मैं 16 जून को घर के लिए रवाना हो गया। 17 जून की शाम को अपने गृहनगर लोहरदगा पहुँचा। एक दिन विश्राम करके 19 जून को मैं अपने दीक्षागुरुजी का आशीर्वाद लेने के लिए उनके लोहरदगा स्थित आवास पर गया। मुझे देखते ही गुरुजी समझ गए और उन्होंने पूछा इतना बीमार कैसे हो गए??? मेरी नाडी भी देखी, कुछ प्राकृतिक चिकित्सा के उपाय भी बताए। फिर मैंने 29 मई से लेकर अबतक की पूर्वोक्त सारी बातें गुरुजी को बताई तब उन्होंने कहा "तुमको मरना वरना नहीं है और रही बात तबियत ठीक करने की तो वो मैं अभी किए देता हूँ।" इतना कहकर उन्होंने अपने तकिए के नीचे से एक कापी निकाली और उसमें से षट्पदी स्तोत्र की व्याख्या मुझे देकर कहा "इसको मेरे सामने बाँचो और तुम ठीक हो जाओगे।" षट्पदी स्तोत्र के पाँच पृष्ठों की उस अद्‌भुत व्याख्या को पढ़कर मेरा चित्त एकदम शान्त हो गया। वो कहते हैं न 'मन के हारे हार है मन के जीते जीत'। मन के ठीक होते ही मैं स्वस्थ महसूस करने लगा। इतने अकल्पनीय और अविश्वसनीय अनुभव पाकर मैं अवाक् रह गया। मतलब न दवा, न झाड फूँक, न कोई तन्त्र क्रिया सिर्फ 5 पन्ने का एक लेख पढ़ाकर कोई किसी को स्वस्थ कैसे कर सकता है भई??? खैर.... वो अतुल्यशक्तिसम्पन्न मेरे गुरुजी हैं कुछ भी कर सकते हैं, पहले भी कई चमत्कार दिखा चुके हैं। मैंने कहा

गुरुजी मैं बहुत स्वस्थ महसूस कर रहा हूँ, यदि आप आज्ञा दें तो मैं अपने मोबाइल से आपके इस लेख का चित्र खींचकर अपने साथ रखना चाहता हूँ यह वाकई चमत्कारिक है। गुरुजी ने कहा अगर अच्छा लगा तो प्रकाशित करा दो। मुझे गुरुजी का प्रस्ताव भा गया और देखिए आज यह ग्रन्थ प्रकाशित होकर आपके हाथों में शोभायमान हो रहा है।

आदिशंकराचार्य जी का परिचय -

शिवावतार आदि-शंकराचार्य महाभाग का नाम तो आप सब जानते ही हैं, उनके ही द्वारा षट्पदी स्तोत्र की रचना की गई है, तो इस स्तोत्र की व्याख्या को पढ़ने से पूर्व उनका संक्षिप्त परिचय भी जानना चाहिए। इस उद्देश्य से आदि-शंकराचार्य महाभाग का सुसंक्षिप्त परिचय मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ। आद्य-शंकराचार्य के जन्म को लेकर मतैक्य नहीं है। गोवर्धनपीठ पुरी के परंपराप्राप्त शंकराचार्य परमादरणीय निश्चलानंद सरस्वती जी रूपी आप्तप्रमाण के अनुसार आदि-शंकराचार्य जी का जन्म युधिष्ठिर संवत् 2631 तदनुसार 507 ईसा पूर्व वैशाख शुक्ल पञ्चमी को हुआ था।[8] विकिपीडिया के अनुसार आदि शंकराचार्य का जन्म 508-9 ईसा पूर्व में तथा निर्वाण 477 ईसा पूर्व में हुआ था।[9] हाँलाकि

---

[8] भगवत्पाद शिवावतार भगवान् शंकराचार्य महभाग का 2527वां प्राकट्य महोत्सव - YouTube

[9] आदि शंकराचार्य - विकिपीडिया (wikipedia.org)

नीचे इसी लेख के अन्तर्गत लिखित 'जीवनचरित' अनुभाग में विकिपीडिया ने आदि-शंकराचार्य जी का जन्म 507 ईसा पूर्व लिखा है। सन् 1949 में आदि-शंकराचार्य विरचित सौन्दर्य लहरी पर स्वामी विष्णुतीर्थ जी की टीका प्रकाशित हुई थी। इसकी pdf इन्टरनेट पर उपलब्ध है।[10] उसके प्रारम्भ में ही विनायकराव बापूजी वैशम्पायन द्वारा लिखित "श्रीमच्छंकर भगवत्पाद की जीवन झांकी और सौन्दर्य लहरी" नामक लेख प्रकाशित है, इसमें विनायकराव जी ने डॉ. भाण्डारकर, जस्टिस तैलंग, लो. तिलक आदि अनेकों विद्वानों का हवाला देते हुए 788 ई. में आदि-शंकराचार्य जी का जन्म लिखा है।
आदिशंकराचार्य जी का जन्म केरल के कालपी (कालडी या काषल) ग्राम में हुआ था। इनके दादा का नाम विद्याधिराज, पिता का नाम शिवगुरु भट्ट तथा माता का नाम सुभद्रा (आर्याम्बा) था। बहुत दिन तक सपत्नीक शिव की आराधना करने के अनंतर शिवगुरु ने पुत्र-रत्न पाया था, अत: उसका नाम शंकर रखा। जब ये तीन ही वर्ष के थे तब इनके पिता का देहांत हो गया। ये बड़े ही मेधावी तथा प्रतिभाशाली थे। छह वर्ष की अवस्था में ही ये प्रकांड पंडित हो गए थे और आठ वर्ष की अवस्था में इन्होंने संन्यास ग्रहण कर लिया था। इनके गुरु का नाम गोविन्दपाद था। आदि शंकराचार्य जी का मण्डन मिश्र और उनकी पत्नी

---

[10] सौंदर्य लहरी हिन्दी पुस्तक | Saundarya Lahari Hindi Book PDF (hindihearts.in)

भारती के साथ शास्त्रार्थ तथा परकाया प्रवेश की कथा सुप्रसिद्ध है। इन्होंने समस्त भारतवर्ष में भ्रमण करके बौद्ध धर्म को मिथ्या प्रमाणित किया तथा वैदिक धर्म को पुनरुज्जीवित किया। धर्मरक्षा के लिए आदि-शंकराचार्य जी ने भारतवर्ष के चार कोनों में चार मठों की स्थापना की थी जो अभी तक बहुत प्रसिद्ध और पवित्र माने जाते हैं और जिन पर आसीन संन्यासी 'शंकराचार्य' कहे जाते हैं। वे चारों स्थान ये हैं- (१) ज्योतिष्पीठ बदरिकाश्रम (२) श्रृंगेरी पीठ (३) द्वारिका शारदा पीठ और (४) पुरी गोवर्धन पीठ। इसलिए परंपराप्राप्त मान्य शंकराचार्यों की संख्या चार से अधिक नहीं हो सकती, फिर भी बहुत खेद और दुर्भाग्य की बात है ,आजकल भारतवर्ष में कलिप्रभाव से छद्म शंकराचार्यों की भरमार हुई पडी है।

आदि-शंकराचार्य ने अद्वैत वेदान्त के सिद्धान्त की स्थापना की तथा उन्होंने सांख्य दर्शन का प्रधानकारणवाद और मीमांसा दर्शन के ज्ञान-कर्मसमुच्चयवाद का खण्डन किया। आदि-शंकराचार्य ने प्रस्थानत्रयी
(श्रीमद्भगवद्गीता, उपनिषद् और ब्रह्मसूत्र) पर भाष्य लिखा जो बहुत प्रसिद्ध है। इसके अलावा उन्होंने विवेकचूड़ामणि आदि अनेकों स्वतंत्र ग्रन्थों की रचना की और अनेकों स्तोत्र आदि भी रचे । उनमें से ही सुप्रसिद्ध स्तोत्र है षट्पदी स्तोत्र जिसपर हमारे गुरुजी ने कमला टीका लिखी है। भारतवर्ष में धर्म की पुनर्स्थापना करने के पश्चात् ३२ वर्ष की अल्पायु में ही

आदि-शंकराचार्य जी ने केदारनाथ के समीप अपनी लीला का संवरण करते हुए शिवलोक प्रयाण किया।

षट्पदी स्तोत्र की महिमा -

आदि-शंकराचार्य जी के साहित्य की तीन शैली है। एक तो भाष्य (जैसे श्रीमद्भगवद्गीता और विभिन्न उपनिषदों पर किया गया भाष्य), दूसरा प्रकरण ग्रन्थ (जैसे विवेक चूड़ामणि, प्रबोध सुधाकर, अपरोक्षानुभूति आदि), तीसरा स्वतन्त्र स्तोत्र आदि। उन्होंने बहुत से स्तोत्र जैसे शिव मानसपूजा, कृष्णाष्टकम्, भवान्यष्टकम्, कालभैरवाष्टकम्, निर्वाणषट्कम् आदि लिखे हैं, वैसे ही यह षट्पदी स्तोत्र भी उनका स्वतन्त्र स्तोत्र है। यह किसी ग्रन्थ का भाग नहीं है। षट्पदी स्तोत्र की रचना कब की गयी, इसका कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता तथा इस स्तोत्र की रचना भगवान् श्रीमन्नारायण की 'प्रपन्नभाव' से आराधना हेतु की गयी है। प्रस्तुत स्तोत्र का नाम षट्पदी क्यों रखा गया है? यह विशेष रूप से समझने योग्य है। काव्य में कविजन श्लेष का प्रयोग करते हैं। जहाँ एक शब्द के दो अर्थ निकलते हैं। प्रकृत स्तोत्र में प्रयुक्त षट्पदी शब्द भी ऐसे ही प्रयोग का उदाहरण है। इस स्तोत्र के षट्पदी नामकरण के दो कारण समझ में आते हैं। प्रथम तो षण्णां पदानां समाहारः (समाहार द्वंद्व) इस अर्थ में स्त्रीत्व की विवक्षा करने पर षट्पदी शब्द का निष्पादन होता है। जिसका तात्पर्य है - छः पदों का समुदाय। अब उक्तार्थ का समन्वय प्रकृत स्तोत्र में कैसे हो तथा षट्पदी नाम की अन्वर्थता कैसे सिद्ध हो

इस विषय में विद्वानों से अनेकश: चर्चा करने पर जो अवगमन हुआ उसे लिख रहा हूँ। षट्पदी स्तोत्र घटक अंतिम श्लोक के प्रथम एवं द्वितीय चरण "नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ" में छः पदों (शब्दों) का समुदाय अर्थात् षट्पदी दृष्ट है। द्वयमन्त्र[11] गर्भित "नारायण करुणामय शरणं करवाणि तावकौ चरणौ" यह छः पद का समुदाय ही इस स्तोत्र का विधेय होने से प्रधान है। अतः तद्घटित या तद्विषयक होने से इस पद को सम्पूर्ण स्तोत्र का उपलक्षण मानकर स्तोत्र का नाम षट्पदी रखा गया है जो सार्थक है। दूसरा कारण यह है कि इस षट्पदी स्तोत्र के छः श्लोकों को लिखने के उपरांत कामनारूपी अंतिम श्लोक में आद्यशंकराचार्य जी ने कहा है कमलरूपी मेरे मुख में भ्रमरी (भँवरे के छः पैर होते हैं) रूपी षट्पदी सदा निवास करे। षट्पद शब्द में ङीप् स्त्रीप्रत्यय करने पर षट्पदी शब्द बनेगा जिसका अर्थ होता है छः पदों (पैरों) वाली भ्रमरी। इससे स्पष्ट होता है कि शंकराचार्यजी को षट्पदी शब्द में तन्त्रावृत्यैकशेष के द्वारा दो अर्थ विवक्षित हैं। प्रथम षड्श्लोकात्मक स्तोत्र द्वितीय भ्रमरी।

षट्पदीस्तोत्रम् आर्या छन्द में लिखी गई है। आर्या छन्द का लक्षण श्रुतबोध ग्रन्थ के अनुसार प्रस्तुत किया जा रहा है –

यस्याः पादे प्रथमे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।

---

[11] ॥ श्रीमन्नारायण चरणौ शरणं प्रपद्ये श्रीमते नारायणाय नमः ॥

अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥[12]

अर्थ - यह मात्रिक छन्द है। इसके प्रथम पाद में १२ मात्रायें होती हैं, द्वितीय में १८, तृतीय में १२ और चतुर्थ में १५ मात्रायें होती हैं।

कमला टीका की विशेषता -

जब मैं गुरुजी द्वारा लिखित षट्पदी स्तोत्र की व्याख्या का सम्पादन कर रहा था तो इस टीका को कोई नाम न देना मुझे अनुचित लग रहा है परन्तु टीका का नाम क्या रखा जाए यह प्रश्न था। इस पर विचार करते समय मेरे मन में हुआ कि आद्यशंकराचार्य जी ने भगवान विष्णु से प्रार्थनारूपी छः पद्यों की रचना की है, अब यदि इसका नाम भगवान विष्णु की शक्ति भगवती लक्ष्मी के नाम पर रखा जाए तो यह लक्ष्मी-नारायण का अद्भुत संयोग भक्तों और जिज्ञासुओं के लिए महत्कल्याणकारी सिद्ध हो सकता। ऐसा भाव बनते ही मेरे मन में एक ही नाम कौंधा 'कमला'। आदरणीया श्रीमति कमला पाण्डेय गुरुजी की पुत्रवधू हैं और बहुत निष्ठा एवं समर्पण के साथ बहुत ही आदर भाव से गुरुजी की खूब सेवा-शुश्रुषा करती हैं। उनका स्वभाव भी अत्यंत सरल है, वह लक्ष्मी की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। इसलिए इस टीका हेतु 'कमला' से उपयुक्त कोई नाम हो ही नहीं सकता। मन में ऐसा

---

[12] श्रुतबोधः, व्रजरत्नभट्टाचार्य, निर्णयसागरमुद्रणयन्त्रालय, पृष्ठ सं. ३

निर्णय होते ही बहुत उल्लास के साथ इस टीका का कमला नामकरण किया गया। इस टीका की विशेषता के संबंध में पहले ही मैं विस्तारपूर्वक अपना अनुभव साझा कर चुका हूँ। गुरुजी की लेखनी अत्यंत प्रौढ़ है।अतः मैंने अपनी समझ के अनुसार सम्पादन के दौरान हर क्लिष्टता को दूर करने का प्रयास किया है और व्याख्या से पूर्व इसमें स्तोत्र का सरल भाषानुवाद भी उद्‌धृत कर दिया है ताकि सामान्य हिन्दी भाषी पाठक भी इसके मर्म को हृदयंगम कर पाएँ। इसके अतिरिक्त ग्रन्थ में तीन परिशिष्ट भी दिए हैं। जिनको यह स्तोत्र अच्छा लगे वे यदि इसका नित्य पाठ करना चाहें तो उनके लिए परिशिष्ट - I में षट्पदी स्तोत्र का पाठ उद्‌धृत किया गया है। परिशिष्ट - II में गुरुजी द्वारा लिखित अब तक की सभी पुस्तकों के निःशुल्क pdf का अर्काइव लिंक उपलब्ध कराया गया है। परिशिष्ट - III में गुरुजी द्वारा लिखित इस टीका की पाण्डुलिपि प्रकाशित की गई है। सबसे अन्त में जिन जिन ग्रन्थों एवं अंतर्जालीयस्रोतों(weblinks) से मैंने इसके संपादन में सहयोग लिया है उनका नाम सन्दर्भ ग्रन्थ सूची और अन्तर्जालीयस्रोत के रूप में संकलित किया गया है। इस ग्रन्थ का निःशुल्क pdf हरिहर ज्योतिर्विज्ञान संस्थान के द्वारा आर्काइव लिंक पर उपलब्ध करा दिया गया है।[13] इस ग्रन्थ के सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए मैं हरिहर ज्योतिर्विज्ञान संस्थान, श्रीभागवतानंद गुरु, श्री मयंक पाण्डेय, श्री कुन्दन

---

[13] User Account (archive.org)

कुमार झा, सुश्री प्रेरणा कुमारी एवं सुश्री सुप्रिया पाण्डेय का आभार प्रकट करता हूँ। इनके अलावा भी जिन ज्ञाताज्ञात लोगों ने इस ग्रन्थ के सम्पादन में मुझे किंचित भी सहयोग किया है मैं उनके प्रति अपना कार्तज्ञ भाव प्रकट करता हूँ। आद्य शंकराचार्य विरचित सुप्रसिद्ध षट्पदी स्तोत्र पर लिखी गई यह सरल, सरस, अद्भुत कमला टीका अपने भाव को आपके हृदय में समाहित करके आपको आध्यात्मिक उन्नति के शिखर तक ले जाएगी। निश्चित ही यह भावपूर्ण कमला टीका आपके चित्त पर सकारात्मक प्रभाव डालते हुए आपके मनोभावों को सही दिशा प्रदान करने में समर्थ होगी। इसी आशा के साथ .....

– ब्रजेश पाठक ज्यौतिषाचार्य

षट्पदीस्तोत्रम्

अविनयमपनय विष्णो दमय मनः

शमय विषयमृगतृष्णाम्।

भूतदयां विस्तारय

तारय संसारसागरतः ॥1॥

भाषानुवाद - अर्थ – हे विष्णु ! मेरी अविनयता को दूर कीजिए, मेरे मन का दमन[14] कीजिए और मृगतृष्णा रूपी विषयों का शमन[15] कीजिए, प्राणिमात्र के प्रति मेरी दयाभावना बढ़ाइए और इस संसार रूपी समुद्र से मुझे पार लगाइए।

---

[14] दमो बाह्येन्द्रियाणां तद्व्यतिरिक्तविषयेभ्यो निवर्तनम् – बाह्येन्द्रियों (पञ्चकर्मेन्द्रियां और पञ्चज्ञानेन्द्रियां) को श्रवणादि के अतिरिक्त विषयों से हटाने को 'दम' कहते हैं। - वेदान्तसारः

[15] शमस्तावत् श्रवणादिव्यतिरिक्तविषयेभ्यो मनसो निग्रहः – श्रवणादि भिन्न विषयों से मन को हटा लेने को 'शम' कहते हैं।

कमला - महान् कवि हरिभक्त, वेदान्तमर्मज्ञ, आद्यशंकराचार्य भगवान् को विष्णु शब्द से सम्बोधित करते हुए प्रार्थना करते हैं ,कि मेरा अविनय दूर कीजिये। विनय से विपरीत मनोभाव को अविनय कहते हैं। विनय क्या है ? भगवान् के प्रति पूर्ण समर्पण का भाव विनय कहा जाता है | समर्पण क्या, क्यों और कैसे होता है? वेदान्ततत्वबोधाधीनस्वरूप निष्ठा की पराकाष्ठा है समर्पण। इस विश्व की रचना करके इसका निरन्तर सञ्चालन जिस अचिन्त्य शक्ति के अधीन जारी है उसे हम विष्णु कहें, भगवान् कहें, परमात्मा कहें या परब्रह्म कहें। वह शक्ति हर व्यक्ति के चित्त का भी सञ्चालन निरन्तर कर ही रही है, उसकी पकड़ से बाहर कभी कुछ नहीं है। इस परम रहस्य को हृदय से स्वीकार करना वास्तव समर्पण होता है। वह समर्पण ही विनय कहा जाता है। माता, पिता, गुरु, स्वामी पर समर्पण भी वही वास्तव विनय है।

"त्वमेव माता च पिता त्वमेव,

त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव

त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥" इत्यादि पद्य यही सूचित करता है। परमात्मा के प्रति विनय मुक्ति का चरम द्वार है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार वि उपसर्ग विवेक विज्ञानपूर्वकत्व का बोध करा रहा है। "णीञ्" प्रापणे धातु का सही अर्थ यहाँ वास्तव स्वीकार है।

संसारी सारे चेतन अर्थ-काम परायण होते हैं, इससे उनमें भगवदीयता का भाव बन ही नहीं पाता। हर प्राणी का चित्त पूर्व कर्मों से बन्धा होने से मुक्ति हेतु बोध अर्जित नहीं कर पाता। इससे हर संसारी अविनीत ही होता है। परम भक्त प्रपत्तिनिष्ठ शंकराचार्य स्वयं के चित्त में अविनय का जमाव देखते हुए मुक्ति हेतु भावना दुर्लभ मानते हुए उक्त अविनय के निवारण की प्रार्थना भगवान् विष्णु से कर रहे हैं। विष्णु शब्द का अर्थ प्राणिमात्र के अन्तःकरण में विराजमान होता है। विष्णु होने से ही वे किसी के चित्त के दोषों को दूर कर सकते हैं। उपनयन के विपरीत अपनयन होता है। उपनयन पहुँचाना होता है तो

अपनयन दूर करना होता है। यहाँ विनय के विपरीत भाव अविनय के अपनयन की प्रार्थना है । सुशिक्षित विवेकी मानव के कल्याण पथ की यात्रा का पहला पड़ाव अविनय का अपनयन होता है। यह भगवान् के दृढ़ संकल्प से ही सम्भव है। इससे भगवान विष्णु से अविनय के अपनयन की प्रार्थना की गयी है। अविनय का वारण मन के दमन से ही सम्भव है इससे "दमय मनः" कहा गया । मन का दमन विषयों पर अधिक स्पृहा के वारण से ही सम्भव है, वह भी सफल होता है प्राणिमात्र पर दयाभाव बनने से, इससे वह भी चाहा गया है। हम कुछ जन्तुओं पर दया करते हैं, स्वयं को और ऊपरवालों को दयनीय नहीं मानते, जबकि ऊपरवाले सारे ही हमारे सहित नीचे वालों के तुल्य ही केवल दया के पात्र हैं। सबकी जाति, आयु और भोग पूर्व कर्मों से पूरे बन्धे होते हैं। सबकी दयनीयता दिखने से अपनी भी दयनीयता नहीं भूलती, तब दयानिधान भगवान भी नहीं भूलते, कोई आपराधिक चिन्तन नहीं हो पाता, यह होने पर संसार समुद्र से पार पाना सम्भव हो जाता है। अतः अन्त में वह औपनिषद परमपुरुष वरणीयता भी चाही गयी है।

दिव्यधुनीमकरन्दे
परिमलपरिभोगसच्चिदानन्दे।
श्रीपतिपदारविन्दे
भवभयखेदच्छिदे वन्दे ॥2॥

भाषानुवाद - लक्ष्मी के पति भगवान् विष्णु के चरणकमलों की वन्दना करता हूँ, जिन चरणकमलों का मकरन्द (पराग) है -दिव्य नदी (गंगा) और परिमल (सुगन्धि) है- सच्चिदानन्द । जो संसार के भय और क्लेशों का नाश करने वाले हैं।

कमला - इस अनन्त अपरिमेय विश्व का सञ्चालन भगवान् के दृढ़ संकल्प से, उनकी ही पूरी अधीनता में फलतः उनके ही चरण कमलयुगल से हो रहा है, इस विश्व का सर्वोपरि तत्त्व उनका चरणकमलयुगल ही है, इससे वेदान्ततत्वनिष्णात जन उक्त युगल की ही सर्वोपरि प्रमुखता देखते हैं। वह प्रमुखता हृदय में प्रतिष्ठित होकर ही संसार के भावी भय और वर्तमान क्लेशों का पूरा काट करती है। इसी से श्रीपतिपदारविन्दों को भवभयखेदच्छिदे कहते हुए

वन्दना करते हैं, उनका सर्वोपरि अस्तित्व स्वीकार करते हैं।

सत्यपि भेदापगमे
नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम्।
सामुद्रो हि तरङ्गः
क्वचन समुद्रो न तारङ्गः ॥3॥

भाषानुवाद - यह सत्य है कि मुझमें और आपमें कोई भेद नहीं है अर्थात् अभेद है तथापि हे नाथ ! मैं ही आपका (अंश) हूँ, आप मेरे (अंश) नहीं । जैसे तरंग और समुद्र में अभेद होने पर भी, तरंग ही समुद्र का अंश होता है, तरंग का अंश समुद्र कहीं नहीं ।

कमला - मायासंसर्गशून्य अवस्था में जीव और ब्रह्म तुल्य ही हैं। किन्तु माया से अनादिकाल से जुड़ा चल रहा जीव स्वयं को परमात्मा के रूप में कभी स्वीकार नहीं करता। बल्कि स्वयं को उनके उपकरण (शेष) रूप में ही देखता है। उक्त उपकरणत्व या शेषत्व जीव का कभी न मिटने वाला धर्म है। यही बात " नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम्" से खुल रही है। यहाँ स्पष्ट

घोषित हो रहा है ,कि भगवान जब चाहें तब जीव मुक्त हो सकता है, किन्तु जीव सौ बार चाह कर भी स्वयं कुछ भी नहीं छूट सकता। यही बात समुद्रतरंगदृष्टांत से यहाँ प्रस्तुत है। यहाँ यह भी ध्यान में रखने योग्य है कि मुक्ति चेतन के संकल्प से सम्भव नहीं है किन्तु बन्ध और मुक्ति का परिज्ञान जीवन को निर्दोष, पवित्र रखने के लिये अति आवश्यक है। पूरे देश को आदर्श जीवन का परिज्ञान होना चाहिये।

उद्‌धृतनग नगभिदनुज
दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे।
दृष्टे भवति प्रभवति
न भवति किं भवतिरस्कार: ॥4॥

भाषानुवाद - हे गोवर्धनधारी ! हे इन्द्र के अनुज ! हे राक्षस कुल के शत्रु ! हे सूर्य-चन्द्र रूपी नेत्र वाले ! आपके दर्शन हो जाने पर भी क्या अनन्त जड़चेतनात्मक विश्व दिखता ही रहेगा ? कभी नहीं।

कमला - "उद्धृतनग" पद्य से अवतार कृष्ण की वह विशेषता समझा रहे हैं जिस पर ध्यान जल्दी नहीं जाता। यहाँ चार सम्बोधन हैं – उद्धृतनग ! पर्वत का उद्धार करने वाले! पर्वत का उद्धार कौन करेगा, इन्द्र ने पर्वतों की उड़ान बन्द की है, उनके अनुज[16] वासुदेव कृष्ण ने ऊंगली पर पर्वत उठा लिया, बड़े भैया के कर्म के विपरीत काम करके दिखलाया। नगभिदनुज ! दूसरा सम्बोधन इन्द्र के विपरीत उक्त महान कर्म सूचित कर रहा है। अगले दो सम्बोधनों दनुजकुलामित्र (राक्षस कुल के शत्रु) और मित्रशशिदृष्टे (सूर्य-चन्द्र रूपी नेत्र वाले) के द्वारा अवतार में भी अवतारी भगवान विष्णु के स्वभाव सूचित कर रहे हैं। इस पद्य से स्पष्ट कहा गया है कि परम आत्मा का परम आत्मत्व जड़ चेतनात्मक पूरे विश्व के स्वरूप, स्थिति और सारी प्रवृत्तियों पर सतत नियन्त्रण वेदान्तवाक्यों से देख लेने पर क्या संसार का तिरोधान नहीं हो जाता? तात्पर्य है कि भगवान् का वास्तव दर्शन

---

[16] श्रीमद्भागवत महापुराण की कथा के अनुसार अदिति के गर्भ से इन्द्रादि देवताओं के बाद भगवान् ने उपेन्द्र अथवा वामन के रूप में जन्म लिया था, इस तरह इन्द्र उनके ज्येष्ठ भ्राता बन गए।

हो जाने पर भी क्या अनन्त जड़चेतनात्मक विश्व दिखता ही रहेगा ? कभी नहीं।

कोई कह सकता है कि भगवान् की कृपा के बिना संसार का अदर्शन कैसे होगा ? उसका उत्तर गम्भीर, भावपूर्ण, यथार्थपरक भाषा में दे रहे हैं कि –

मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवता-
वता सदा वसुधाम्।
परमेश्वर परिपाल्यो
भवता भवतापभीतोऽहम् ॥5॥

भाषानुवाद - मत्स्यादि नाना अवतारों के द्वारा बारम्बार अवतरित होकर वसुधा की सर्वदा रक्षा करने वाले हे परमेश्वर! संसार के त्रिविध तापों से भयभीत हुआ मैं आपके द्वारा परिपाल्य हूँ ।

कमला - भगवान् तो बारम्बार नाना अवतार ले ले कर विश्व की रक्षा में सदा तत्पर हैं ही। उनकी कृपा अति स्वाभाविक और सुलभ भी है। भगवान् को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि आप परम ईश्वर हैं, स्वामियों के भी स्वामी हैं। मैं सांसारिक क्लेशों से डरा हुआ हूँ।

मेरी हर प्रकार से रक्षा कीजिये। यानी रक्षा के वे सारे उपाय कर दीजिये जिनके हो जाने के बाद संसार बन्धन का क्लेश भी न बचे। यहाँ 'परमेश्वर' का परम और परिपाल्य: का परिउपसर्ग बहुत गम्भीर भाव रख रहे हैं।

दामोदर गुणमन्दिर
सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द।
भवजलधिमथनमन्दर
परमं दरमपनय त्वं मे ॥6॥

भाषानुवाद - हे दामोदर ! हे गुणों के मन्दिर ! हे सुन्दर कमलरूपी मुख वाले ! हे गोविन्द ! हे संसार रूपी समुद्रमंथन के हेतुभूत मन्दराचलपर्वत रूप ! मेरे महान् भय को आप दूर कीजिए।

कमला - दामोदर आदि पाँच सम्बोधनों से भगवान के पाँच असामान्य गुण वैभव सूचित कर रहे हैं।

1. दामोदर ! से भक्ताधीन वृत्ति भगवान का वह असामान्य वैभव है जिसकी कहीं कोई तुलना नहीं है। माता यशोदा ने शिशु कृष्ण

की चपलता रोकने हेतु कमर में रस्सी बान्धी थी। रस्सी बान्धने में उन्हें कितना श्रम हुआ यह तो कथा से विदित ही है। भगवान् वास्तव में अपनी दया से बन्धे, रस्सी तो दिखावे मात्र की थी।

2. गुणमन्दिर ! सम्बोधन से अपने अगणित रक्षोपाय निपुणता और रक्षा में तत्परता भी कही गयी है। मन्दिर शब्द से सकल रक्षोपायप्रवीणता भी सूचित हो रही है। आश्रितों की सुरक्षा के सर्वाधिक विश्वस्त परम सत्ता का बोध भी हो रहा है।
3. सुन्दरवदनारविन्द ! सम्बोधन आश्रितों की सुरक्षा हेतु उन्हें असामान्य सौन्दर्य से वश में रखने हेतु परम दयामयता पर उनका ध्यान बनाया गया है।
4. गोविन्द ! सम्बोधन का प्रसिद्ध अर्थ आश्रितों के, सामान्य जनों के भी मन इन्द्रियों पर उनका सतत नियन्त्रण है ही। यहाँ रक्षोपायों में तनिक भी शिथिलता या प्रमाद या उपेक्षा का न होना भी स्पष्ट घोषित हो रहा है।

5. भवजलधिमथनमन्दर ! सम्बोधन आश्रितों के संसार बन्धनों को समुद्रतुल्य अथाह कहते हुए उस समुद्र के मंथन के लिये प्रभु को मन्दर पर्वत कहते हैं। मन्दर पर्वत घूमता हुआ भवबन्धनों के विध्वंस में तत्परता जारी ही रखता है, इससे भगवान् स्वयं ही आश्रितों के सक्रिय मोक्षोपाय हैं। आश्रितों की मुक्ति में भगवान् की ओर कोई व्यवधान नहीं है यह सूचित करते हुए "त्वं मे परमं दरमपनय" से संसार बंधन के सबसे बड़े भय के निवारण की प्रार्थना की गयी है, वह पूरी हुई।

प्रार्थना "अपनय" से शुरु हुई, "अपनय" से ही पूरी भी हुई। प्रार्थना की निश्चित सफलता हेतु प्रार्थना के सर्वथा अनुरूप शरणागति मंत्र का जप जारी रखा जाता है ताकि प्रार्थना किसी प्रमाद में मिट न जाये। यह सात्विक जनों का महत्वपूर्ण वैभव माना जाता है।

शरणागति मन्त्र मुख में चलता ही रहे इसकी प्रार्थना यहाँ की गयी है -

नारायण, करुणामय,

शरणं करवाणि तावकौ चरणौ।

इति षट्पदी मदीये

वदनसरोजे सदा वसतु ॥7॥

भाषानुवाद - हे करुणामय नारायण! मैं आप के चरणों का अनन्य शरणागत हूँ, यह षट्पदी (पदों की स्तुति रूपिणी भ्रमरी) मेरे मुख कमल में सदा निवास करे।

कमला - भोजन के समय, निद्रा के समय भाषण सम्भव नहीं होता, ऐसी स्थिति में सदा वसतु कैसे कहा गया है ? उत्तर है कि भाषण भले न हो पाये किन्तु भाषण का संस्कार तो रहेगा ही। षट्पदी भ्रमरी कमल पर बैठती है रस लेने को, रस लेकर वह भले अपने छत्ते को चली जाये पर कमल को वह कभी भूल नहीं सकती, याद रखती ही है, इसी से बार बार आती है। जैसे पशु पक्षियों की अपनी एक अलग ध्वनि होती है, जब भी निकलती है तब वही ध्वनि निकलती है, इससे उनकी पहचान बनी रहती है । वेदान्ततत्त्व का मर्मज्ञ मनीषी जानता है कि विद्वान् के मुख से शरणागति

मन्त्र के सिवा अन्य कोई ध्वनि कैसे हो सकती है। अन्य ध्वनि न निकलना ही छः पदों वाले शरणवरण मन्त्ररूपी षट्पदी (भ्रमरी) का मुखकमल में सदा वास माना जाता है |

वेदान्तविज्ञानविधूतमोहाः
श्रीशैकसेवामय सत्समीहाः ।
सन्त्येव सन्तः कतिचित्स्वदेशे,
वेषेण, वाचा, क्रियया परीक्ष्याः ॥[17]

---

[17] अर्थ - वेदान्त के विज्ञान के द्वारा जिनका मोह निकल गया है, श्रीहरि की सेवामात्र में रत रहने की जिनकी इच्छा है, ऐसे महात्मा अपने देश में कुछ ही होते हैं जो वेष, भाषा एवं क्रिया (आचारव्यवहारादि) के द्वारा परखे जाते हैं।

परिशिष्ट – 1

षट्पदीस्तोत्रम्

(मूलपाठ)

अविनयमपनय विष्णो

दमय मनः शमय विषयमृगतृष्णाम्।

भूतदयां विस्तारय

तारय संसारसागरतः ॥1॥

दिव्यधुनीमकरन्दे परिमलपरिभोगसच्चिदानन्दे।

श्रीपतिपदारविन्दे भवभयखेदच्छिदे वन्दे ॥2॥

सत्यपि भेदापगमे

नाथ तवाहं न मामकीनस्त्वम्।

सामुद्रो हि तरङ्गः

क्वचन समुद्रो न तारङ्गः ॥3॥

उद्धृतनग नगभिदनुज

दनुजकुलामित्र मित्रशशिदृष्टे।

दृष्टे भवति प्रभवति

न भवति किं भवतिरस्कार: ॥4॥

मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवता-

वता सदा वसुधाम्।

परमेश्वर परिपाल्यो

भवता भवतापभीतोऽहम् ॥5॥

दामोदर गुणमन्दिर

सुन्दरवदनारविन्द गोविन्द।

भवजलधिमथनमन्दर

परमं दरमपनय त्वं मे ॥6॥

नारायण करुणामय

शरणं करवाणि तावकौ चरणौ।

इति षट्पदी मदीये

वदनसरोजे सदा वसतु ॥

॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं षट्पदीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

परिशिष्ट – 2
डॉ. विन्ध्येश्वर पाण्ड़ेय गुरुजी की पुस्तकें निःशुल्क pdf के रुप में उपलब्ध

परम हर्ष और सौभाग्य की बात है कि भारतवर्ष के अद्वितीय अतुल्य नैयायिक, वैयाकरण, साहित्यविद् एवं ज्यौतिषाचार्य सत्सम्प्रदायरत्न पं. विष्वक्सेनाचार्य (डॉ. विन्ध्येश्वर पाण्डेय) गुरुजी(मेरे दीक्षा-गुरुजी) द्वारा लिखित पुस्तकें एवं लेख हरिहर ज्योतिर्विज्ञान संस्थान के सौजन्य से निःशुल्क pdf के रुप में इन्टरनेट अर्काइव पर ऑनलाइन उपलब्ध करा दी गई हैं।

दर्शन, धर्म, गीता, अध्यात्म, राष्ट्रोत्कर्ष, राष्ट्रधर्म, देशसेवा, राष्ट्रपरायणता, वर्तमान समय में भारतवर्ष की समस्या एवं उसका समाधान, स्वयं की पहचान, मुक्ति पथ प्रदर्शक जैसे ज्वलंत विषयों पर आधारित गुरुजी द्वारा लिखित पुस्तकों एवं लेखों को अवश्य पढ़ें तथा अन्य लोगों को भी पढ़ने हेतु प्रेरित करें।

अर्काइव पर अपना रीव्यू अवश्य दें तथा इसे अधिकाधिक शेयर करें।

1. **सूक्तिमुक्तावली**

https://archive.org/details/sukti-muktavali

2. **सनातन संस्कृति सुरक्षा संसद**

https://archive.org/details/sanatan-sanskriti-suraksha-sansad

3. **राष्ट्रिय चिन्तन और प्रशिक्षण**

https://archive.org/details/rashtriya-chintan

4. **राष्ट्रिय सुदर्शन**

https://archive.org/details/rashtriy-sudarshan

5. **प्रतिबुद्ध मतदान**

https://archive.org/details/pratibuddha-matdan

6. मानवता की परख

https://archive.org/details/manavta-ki-parakh

7. परमार्थ प्रकाश

https://archive.org/details/parmarth-prakash

8. गीता गंगा + सूक्ति सौरभ

https://archive.org/details/gita-ganga-sukti-saurabh

9. गीतागंगा (द्रुतविलम्बिता)

https://archive.org/details/gita-ganga-drutavilambita

10. गीतागंगा (स्रग्धरा)

https://archive.org/details/gita-ganga-sragdhara

11. हर पल अपनी पहचान

https://archive.org/details/har-pal-apni-pahchan

12. धर्म और अधर्म

https://archive.org/details/dharm-aur-adharm

13. चुनाव चातुरी धूरी

https://archive.org/details/chunav-chaturi

14. भावकुसुमाञ्जली

https://archive.org/details/bhav-kusumanjali

(II)

+ हम कुछ जन्तुओं पर दया करते हैं, सर्पों और कुत्तों को दयनीय नहीं मानते, जब कि काटने वाले सारे ही हमारे, उचित नीचे वालों के तुल्य ही केवल दया के पात्र हैं। सबकी जाति आयु और भोग एवं कर्मों से पूरे जन्म होते हैं। सबकी दयनीयता सोचो।

अब हम प्रत्येक पद्य के गम्भीर और मार्मिक भावों पर ध्यान देते हैं,
महान् कवि, हरिभक्त, वेदान्तमर्मज्ञ, आद्य शंकराचार्य भगवान्
~~से प्रार्थना करते हुए~~ को विष्णु शब्द से सम्बोधित करते हुए
प्रार्थना करते हैं कि मेरा अविनय दूर कीजिये। विनय से विपरीत
मनोभाव को अविनय कहते हैं। विनय क्या है? भगवान् के प्रति
पूर्ण समर्पण का भाव विनय कहा जाता है। समर्पण क्या, कैसे होता है? वेदान्ततत्त्वबोधाधीनस्वरूपनिष्ठप्रतिकारणता है समर्पण। इस कौन और
विश्वकी रचनाकर्ता इसका नियन्त्रण संचालन जिस अचिन्त्य शक्ति के अधीन जारी
है उसे हम भगवान कहें, परमात्मा कहें या परब्रह्म कहें वह शक्ति हर व्यक्ति
के चित्त का भी सञ्चालन नियन्त्रण करती रही है, उसकी पकड़ से बाहर कभी
कुछ नहीं है, इस परम सत्य को हृदय से स्वीकार करना वास्तव समर्पण
होता है। वह समर्पण ही विनय कहा जाता है। माता, पिता, गुरु, स्वामी पर
समर्पण भी वही वास्तव विनय है। "त्वमेव माता च०" इत्यादि पद्य
यही सूचित करता है। परमात्मा के प्रति विनय मुक्ति का परम द्वार है।
संस्कृतव्याकरण के अनुसार वि उपसर्ग पूर्वक विनय विशेषनम्रता पूर्वकत्व का बोध कराता है।
"णीञ् प्रापणे" धातु का सही अर्थ वास्तव स्वीकार है।

संसारी लोग चेतन अर्थ काम परायण होते हैं इससे उनमे भगवदीयता
का भाव बन नहीं पाता। हर प्राणी का चित्त पूर्व कर्मों से बन्धा होने से
मुक्तिहेतु बोध अर्जित नहीं कर पाता। इस हेतु हर संसारी अविनीत ही
होता है। परम भक्त प्रणतिनिष्ठ शंकराचार्य स्वयं के चित्त में
अविनय का जमाव देखते हुए, मुक्तिहेतु भावना दुर्लभ मानते हुए उक्त
अविनय के निवारण की प्रार्थना भगवान् विष्णु से कर रहे हैं। विष्णु
शब्द का अर्थ प्राणिमात्र के अन्तःकरण में विराजमान होता है। विष्णु ही
ही किसी के चित्त के दोषों को दूर कर सकते हैं। उपनयन के विपरीत
अपनयन होता है। उपनयन पहुँचाना होता है तो अपनयन दूर करना होता है।
यहाँ विनय के विपरीत भाव अविनय के अपनयन की प्रार्थना है।

सुशिक्षित विवेकी मानव की कल्याण पथ की यात्रा का पहला
पड़ाव अविनय का अपनयन होता है। यह भगवान् के दृढ संकल्प से
ही सम्भव है। इससे भगवान विष्णु से अविनय के अपनयन की प्रार्थना
की गयी है। अविनय का वारण मन के दमन से ही सम्भव है इसलिए "दमय
मनः" कहा गया, मन का दमन विषयों पर अधिक स्पृहा के वारण से ही
सम्भव है, वह भी सफल होता है प्राणिमात्र पर दयाभाव बनाने से, इससे यह

(IV)

कोई कह सकता है कि भगवान की कृपा के बिना रक्षा का आश्वासन कैसे होगा ?
उसका उत्तर गम्भीर, भावपूर्ण, यथार्थपरक भाषा में दे रहे हैं कि भगवान तो बार-बार
नाना अवतार ले ले कर विश्व की रक्षा में सदा तत्पर रहते ही हैं। उनकी कृपा अति स्वाभाविक
और सुलभ भी है। भगवान को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि आप परम
ईश्वर हैं, स्वामियों के भी स्वामी हैं। मैं सांसारिक कष्टों से डरा हुआ हूँ।
मेरी हर प्रकार से रक्षा कीजिये। पापी रक्षा के न होने उपाय कर दीजिये जिनके
हो जाने के बाद संसार बन्धन का लेश भी न बचे। यहाँ "परमेश्वर" का परम और
पापोपहारी का पापोपहारी बहुत गम्भीर भाव रख रहे हैं।
दामोदर आदि पाँच सम्बोधनों से भगवान के पाँच
असामान्य वैभव सूचित कर रहे हैं। 1- दामोदर! से भक्ताधीन वृत्ति
भगवान का वह असामान्य वैभव है जिसकी कहीं कोई तुलना
नहीं है। माता यशोदा ने शिशु कृष्ण की चपलता रोकने हेतु कमर में
रस्सी बान्धी थी। रस्सी बान्धने में उन्हें कितना श्रम हुआ यह तो
कथा से विदित ही है। भगवान वास्तव में अपनी दया से बन्धे,
रस्सी तो दिखाने मात्र की थी। 2- गुणमन्दिर! सम्बोधन से अपने
अगणित रक्षोपाय निपुणता और रक्षा में तत्परता भी कही गयी है।
मन्दिर शब्द, सकल रक्षोपायप्रवीणता भी सूचित हो रही है। आश्रितों
को सुरक्षा के सर्वाधिक विश्वस्त परम स्थलों का बोध भी हो रहा है।
3- सुन्दरवदनारविन्द! सम्बोधन आश्रितों की सुरक्षा हेतु उन्हें
असामान्य सौन्दर्य से वश में रखने हेतु परम दयामयता पर उनका ध्यान
बनाया गया है। 4- गोविन्द! सम्बोधन का प्रसिद्ध अर्थ आश्रितों के,
सामान्य जनों के भी मन इन्द्रियों पर उनका सतत नियन्त्रण है ही।
यहाँ रक्षोपायों में तनिक भी शिथिलता या प्रमाद या उपेक्षा का न होना
भी स्पष्ट घोषित हो रहा है। 5- भवजलधिमथनमन्दर! सम्बोधन
आश्रितों के दुःख बन्धनों को समुद्रतुल्य अथाह कहते हुए उस समुद्र के
मथन के लिये मन्दर पर्वत कहा गया है। मन्दर पर्वत घूमता हुआ भवबन्धनों के
विध्वंस में तत्परता जारी ही रखता है, इससे भगवान स्वयं ही आश्रितों के
मोक्षोपाय हैं। आश्रितों की मुक्ति में भगवान की ओर कोई व्यवधान
नहीं है यह सूचित करते हुए "मे परमं दरमपनय" से संसार बन्धन के
सबसे बड़े भय के निवारण की प्रार्थना की गयी है। वह पूरी हुई।
प्रार्थना "अपनय" से शुरु हुई, "अपनय" से ही पूरी भी हुई। प्रार्थना की
निश्चित सफलता हेतु आगामी मन्त्र का जप जारी रखा जाता
(आर्त्तता के प्रतिफल अनुसार)

(V)

यह सात्विक जनों का महत्त्वपूर्ण वैभव माना जाता है। शरणागति
मन्त्र मुख मे चलता ही रहे इसकी प्रार्थना यहाँ की गयी है।
नारायणे, करुणामय, शरणं करवाणि तावकौ चरणौ।
इति षट्पदी मदीये, वदनसरोजे सदा वसतु।

भोजन के समय, निद्रा के समय भाषण सम्भव नहीं होता, ऐसी स्थिति मे सदा वसतु कैसे कहा गया है? उत्तर है कि भाषण भले न हो पाये किन्तु भाषण का संस्कार तो रहेगा ही। षट्पदी भ्रमरी कमल पर बैठती है रस लेने को, रस लेकर वह भले अपने घर को चली जाये पर कमल को वह कभी भूल नहीं सकती, याद रखती ही है, इसी से बार बार आती है।

जैसे पशुपक्षियों की अपनी एक अलग ध्वनि होती है, जब भी निकलती है तब वही ध्वनि निकलती है, इससे उनकी पहचान बनी रहती है। वेदान्ततत्त्व का मर्मज्ञ मनीषी जानता है कि विद्वान के मुख मे शरणागति मन्त्र के सिवा अन्य कोई ध्वनि कैसे हो सकती है। अन्य ध्वनि न निकलना ही छः पद वाले शरणागति मन्त्र रूपी षट्पदी (भ्रमरी) का मुखकमल मे सदा वास माना जाता है।

वेदान्तविज्ञानविधूतमोहाः, श्रीशैलकान्ताविनयसत्समीक्षाः
सन्त्येव सन्तः कतिचित्क्वदेशे, वेषेण, वाचा, क्रियया परीक्ष्याः।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

- श्रीमद्वेंकटनाथ विरचित श्रीमद्रहस्यत्रयसार
- श्रीमद्भगवद्गीता, गीताप्रेस गोरखपुर
- फलितराजेन्द्र, Notion Press
- स्तोत्ररत्नावली, गीताप्रेस गोरखपुर
- नक्षत्रमाहेश्वरी, Notion Press
- मुहूर्तचिन्तामणि, पं.विन्ध्येश्वरी प्रसाद द्विवेदी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
- धुरन्धर संहिता, Notion Press
- श्रीसम्प्रदाय का इतिहास, वै.वा. श्री अनिरुद्धाचार्य वेंकटाचार्य, श्री श्री वत्समठ चांदोद
- श्रीवैष्णवमताब्जभास्करः, श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः
- श्रुतबोधः, व्रजरत्नभट्टाचार्य, निर्णयसागरमुद्रणयन्त्रालय
- वेदान्तसार, डॉ.आद्याप्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन
- सौन्दर्य लहरी, स्वामी विष्णुतीर्थ
- सांख्यकारिका, पं.श्री आशुबोध विद्याभूषण एवं पं. श्री नित्यबोध विद्यारत्न, वाचस्पतियंत्रे मुद्रिता

- संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश, वामन शिवराम आप्टे, श्री प्रकाशन

अंतर्जालीयस्रोत

- सौंदर्य लहरी हिन्दी पुस्तक | Saundarya Lahari Hindi Book PDF (hindihearts.in)
- आदि शंकराचार्य - विकिपीडिया (wikipedia.org)
- 1102163 | मृत्यु के सभी रूप जानलेवा नहीं (prabhatkhabar.com)
- User Account (archive.org)
- Shabdakalpadruma | Sanskrit - Apps on Google Play

फलित राजेन्द्र

क्या आप ज्योतिष सीखना व समझना चाहते हैं?
क्या आप ज्योतिष की रहस्यमयी दुनिया में प्रवेश पाना चाहते हैं
?
क्या आप अपनी कुंडली का फलादेश जानना चाहते हैं?
क्या आप एक कुशल फलितवेत्ता बनना चाहते हैं ?
कुंडली के आधार पर जीवन के सारांश को समझना चाहते हैं?
जन्मफल का ज्ञान करना चाहते हैं?
अपना पीड़ित ग्रह व दोषों के बारे में जानना चाहते हैं?
विभिन्न शुभाशुभ योगों के बारे में जानना चाहते हैं?
अस्त ग्रहों द्वारा फलादेश करना चाहते हैं ?
वक्री ग्रहों के फलादेश संबंधी गूढ़ रहस्यों को जानना चाहते हैं?
"ग्रहगति द्वारा फलकथन की अपूर्व विशेषता का प्रथम बार सम्पूर्ण विवेचन" जैसे महत्वपूर्ण विषयों को पढ़ना चाहते हैं?
दशाफल के सटीक नियम सीखना चाहते हैं?

तो ये ग्रन्थ आपके लिए ही लिखा गया है।
यह ग्रन्थ आपकी फलादेश कुशलता में अप्रतिम वृद्धि करता है।
तो देर न करें, अपनी प्रति आज ही आर्ड़र करें ।

पुस्तक का नाम - फलित राजेन्द्र
ग्रन्थकार - ब्रजेश पाठक 'ज्यौतिषाचार्य'
पुस्तक की भाषा – हिन्दी
प्रकाशक – Notion Press

नक्षत्र माहेश्वरी

क्या आप एक कुशल नक्षत्रफलितवेत्ता बनना चाहते हैं ?
केवल जन्म नक्षत्र के आधार पर जीवन के सारांश को समझना चाहते हैं?
जन्मनक्षत्रफल का ज्ञान करना चाहते हैं?
अपना पीड़ित नक्षत्र जानना चाहते हैं?
मूलसंज्ञक नक्षत्रों को बारीकी से समझना चाहते हैं?
रोगोत्पत्ति नक्षत्र द्वारा रोगावधि का ज्ञान करना चाहते हैं ?
नक्षत्र द्वारा नष्टवस्तु का ज्ञान करना चाहते हैं ?
अपने पीड़ित नक्षत्र का उपचार करना चाहते हैं ???
नवतारा चक्रों द्वारा फलादेश करना चाहते हैं ???
विभिन्न शुभाशुभ नक्षत्र योगों के बारे में जानना चाहते हैं?
सामुदायिक, सांहातिक, वैनाशिक आदि नक्षत्रों द्वारा फलादेश करना सीखना चाहते हैं?
कुलाकुलादि नक्षत्रों का जन्मफल जानना चाहते हैं?

तो ये ग्रन्थ आपके लिए ही लिखा गया है।

यह ग्रन्थ आपकी फलादेश कुशलता में अप्रतिम वृद्धि करता है।

देर न करें, अपनी प्रति आज ही आर्ड़र करें ।

पुस्तक का नाम - नक्षत्र माहेश्वरी
लेखक – श्रीभागवतानंद गुरु
व्याख्याकार एवं सम्पादक - ब्रजेश पाठक 'ज्यौतिषाचार्य'
पुस्तक की भाषा - संस्कृत एवं हिन्दी

धुरन्धर संहिता

हर सनातनी को यह ग्रन्थ अवश्य पढ़ना चाहिए। इस ग्रन्थ में जीवन का उद्देश्य, सनातनी जीवनशैली, भारतवर्ष की महिमा, परमलक्ष्य की प्राप्ति के साधन आदि सारे व्यावहारिक तथ्यों को समावेशित किया गया है । मैं दावा कर सकता हूँ कि एक बार अगर किसी ने इस ग्रन्थ को पढ़ लिया तो निश्चित रूप से उसका जीवन बदल जाएगा उसके सोचने की शैली में बहुत सकारात्मक परिवर्तन होगा ।आप अवश्य पढ़ें तथा अन्यों को भी प्रेरित करें....

पुस्तक का नाम – धुरन्धर संहिता

लेखक – श्रीभागवतानंद गुरु

अनुवादक एवं सम्पादक - ब्रजेश पाठक 'ज्यौतिषाचार्य'

पुस्तक की भाषा - संस्कृत एवं हिन्दी

मान्यमान्याः परमपूज्याः भगवच्छरणशिरोमणयः
श्रीवैष्णवाग्रगण्याः महान्तः वैयाकरणाः, नैयायिकाः,
साहित्याचार्याः, आशुकवयः, नैकग्रन्थप्रणेतारः
ज्योतिर्विदश्च श्रीमन्तः डॉ. विष्वक्सेनाचार्याः
(पं.श्रीविन्ध्येश्वरपाण्डेयाः) गुरुचरणाः ।